अध्याय 3

मेलबलि

लैव्यव्यवस्था में वर्णित मेलबलि तीसरे प्रकार का बलिदान है। इस विषय से इस्राएली लोग, जिनके बारे में परमेश्वर ने लैव्यव्यवस्था में बताया, इससे था अनभिज्ञ नहीं थे; लेवीय व्यवस्थाओं के दिए जाने से पहले ही वे मेलबलि चढ़ाते थे (निर्गमन 20:24; 24:5)। अध्याय 3 और 7 में, परमेश्वर ने अपने लोगों को दिशानिर्देश प्रदान किया, ताकि निवासस्थान में जब वे मेलबलि चढ़ाएँ तो उसका पालन करें।

"मेलबलि" का अनुवाद इब्रानी शब्द שְׁלָמִים *(शेलामिम)*, जो שָׁלֵם *(शेलेम)* के बहुवचन है से किया गया है। यह शब्द שָׁלוֹם *(शालोम)* से सम्बन्धित है, जिसका अर्थ है "शान्ति।" शालोम को "परिपूर्णता," "भलाई" और "समृद्धि" के रूप में परिभाषित किया गया है।[1] जॉर्ज ए. एफ. नाइट ने कहा कि शालोम का अर्थ *"पूर्णता, परिपूर्णता, समन्वयता"* के समान है" "और इसलिये इस प्रकार के बलिदान का "लक्ष्य 'पूर्णता' को प्राप्त करना या एक तरह से उसे दृढ़ करना है।" और उन्होंने कहा कि, क्योंकि शब्द *शेलामिम* बहुवचन रूप में पाया जाता है, इसलिये यह सुझाव देता है *"शान्ति की वाचा के भीतर रखना, या परमेश्वर के साथ सद्भाव या परिपूर्णता या संगति।"*[2] गोर्डन जे. वेनहैम ने "मेलबलि" के लिये इस शब्द के अन्य सम्भावित अर्थों पर चर्चा करने के बाद, निष्कर्ष निकाला कि इसका तात्पर्य शालोम से होना चाहिए। उन्होंने कहा,

> इब्रानी में शान्ति, युद्ध की अनुपस्थिति से बढ़कर अर्थ देता है। सच्ची शान्ति का अर्थ है स्वास्थ्य, समृद्धि और परमेश्वर के साथ मेल अर्थात् उद्धार। मेलबलि की इस समझ को कई प्राचीन और आधुनिक लेखकों द्वारा स्वीकार किया गया है, जिससे लगता है कि यह प्रमाण के साथ [पुराना नियम] उचित न्याय करने के समान है।[3]

अध्याय 3 में मेलबलि का वर्णन लैव्यव्यवस्था 7:11-36 में अतिरिक्त जानकारी के साथ किया गया है। पिछले दोनों बलिदानों के समान, यह एक स्वैच्छिक बलिदान था जिसे "आग के ऊपर हवन" कहा जाता है और परिणामस्वरूप जो "यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन" ठहरता था (3:5,16)। होमबलि के विपरीत, यह "प्रायश्चित्त" के लिये नहीं कहा गया है। फिर भी, तथ्य यह है कि बलिदान का चढ़ाने वाला पशु के सिर पर अपना हाथ रखकर बलिदान चढ़ाता था (3:2, 8, 13) और तथ्य यह भी है कि जानवर का लहू वेदी

पर छिड़का जाता था, दोनों का अर्थ है कि मेलबलि का एक उद्देश्य पापों के लिये क्षमा माँगना था।

मेलबलि के बारे में अधिकांश निर्देश पिछले बलिदानों के लिये दिए गए निर्देशों के समान हैं। एक अन्तर यह है कि मेलबलि के लिये बलिदान किया जाने वाला पशु या तो नर या मादा हो सकता था, जबकि एक होमबलि में बलिदान किया जाने वाला पशु नर होना चाहिए था। परन्तु, मेलबलि और पिछले वर्णित बलिदानों के बीच प्रमुख अन्तर होता था कि मांस का है। जबकि बलि किए जाने वाले पशु के कुछ भाग (जिसकी विशेषता लैव्यव्यवस्था 3 में बताई गई है) को वेदी पर जला दिया जाता था और अन्य भागों को याजकों द्वारा (जैसा कि अन्न बलि के साथ हुआ था) खाया जाता था, पशु का अधिकांश भाग उस मनुष्य द्वारा खाया जाता था जो उस बलि पशु को लाता था। मांस को अपने परिवार और मित्रों के साथ साझा किया जा सकता था। यद्यपि बाइबल के कई संस्करण "मेलबलि" (KJV; NKJV; ESV) या "भलाई का बलिदान" (NRSV; NJPSV) का अनुवाद करके *शेलेम* शब्द का शाब्दिक अर्थ दर्शाते हैं, अन्य इस बात पर ज़ोर देते हैं कि बलिदान का अधिकांश भाग बलिदान के चढ़ाने वालों के बीच में साझा किया जाता था। NIV इसे "संगति बलि" अनुवाद करता है, REB इसे "साझा-भेंट" कहता है और NJB इसे "भोज बलिदान" कहता है।

मेलबलि के "संगति" पहलू का वर्णन लैव्यव्यवस्था 3,[4] में नहीं किया गया है, जबकि पहले पाठक इसके बारे में जानते थे, इसमें कोई संदेह नहीं है। परन्तु, इस अध्याय में परमेश्वर के निर्देशों से सम्बन्धित है कि बलिदान का चढ़ाने वाला क्या ला सकता था और उसे कैसे चढ़ाया जाना चाहिए था। तीन प्रकार के जानवरों को मेलबलि के रूप में बलिदान किया जा सकता था।

गाय-बैलों में से मेलबलि (3:1-5)

[1]"यदि उसका चढ़ावा मेलबलि का हो, और यदि वह गाय-बैलों में से किसी को चढ़ाए, चाहे वह पशु नर हो या मादा, तो जो निर्दोष हो उसी को वह यहोवा के आगे चढ़ाए। [2]और वह अपना हाथ अपने चढ़ावे के पशु के सिर पर रखे और उसको मिलापवाले तम्बू के द्वार पर बलि करे; और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे उसके लहू को वेदी के चारों ओर छिड़कें। [3]और वह मेलबलि में से यहोवा के लिये हवन करे, अर्थात् जिस चरबी से अंतड़ियाँ ढपी रहती हैं, और जो चरबी उनमें लिपटी रहती है वह भी, [4]और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चरबी जो कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभों को वह अलग करे। [5]तब हारून के पुत्र इनको वेदी पर उस होमबलि के ऊपर जलाएँ, जो उन लकड़ियों पर होगी जो आग के ऊपर है कि यह यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे।"

बलिदान का चढ़ाने वाला परमेश्वर को अपने पशुओं के "एक झुंड" में से किसी

भी एक पशु का बलिदान चढ़ा सकता था।

आयतें 1-5. यह अध्याय यह स्पष्ट करते हुए शुरू होता है कि जो परमेश्वर को मेलबलि चढ़ाता था, वह अपनी इच्छा के अनुसार ऐसा करता था: **"यदि उसका चढ़ावा मेलबलि का हो ..."** (3:1)। इब्रानी शब्द זֶבַח *(ज़ेबच)* का अनुवाद "बलिदान" के रूप में किया गया है, जिसे पुराने नियम में इसकी सम्बन्धित क्रिया זָבַח *(ज़बाच)* के साथ, "जो भोजन बनाने के लिये पशुओं की हत्या करने से लगभग पूरी रीति से संदर्भित है।"[5] ये दोनों शब्द *शेलामिम* ("मेलबलि") से पहले इस्राएलियों द्वारा प्रयोग किए जाते थे, इसलिये उन्होंने उसी शब्द को नामित किया (देखें निर्गमन 8:27, 28; 10:25; 12:27; 18:12)।[6]

प्रारम्भिक खण्ड में कोई अनिवार्यता निहित नहीं है; बलिदान वैकल्पिक था। कोई भी यह चुन सकता है कि परमेश्वर को मेलबलि चढ़ाएँ या नहीं चढ़ाएँ। यदि वह ऐसा करता था, तो तीन प्रकार के जानवरों में से किसी एक को **यहोवा के आगे** (3:1, 7, 12) लाया जा सकता था, अर्थात् याजकों के समक्ष पहले उसे प्रस्तुत किया जाता था।

जो स्वेच्छा से मेलबलि चढ़ाने का निर्णय करता था उसे विशिष्ट नियमों का पालन करना पड़ता था, जो होमबलि के नियमों के समान थे।

सबसे पहले, वह **नर हो या मादा** चढ़ा सकता था, परन्तु उसे **निर्दोष** (3:1) होना था। बाद में परमेश्वर ने यह स्पष्ट किया कि यदि मेलबलि स्वतन्त्र इच्छा से होती थी, तो उसे स्वीकार किया जा सकता था, भले ही वह दोषपूर्ण होता था। परन्तु, एक दोषपूर्ण पशु एक मन्नत बलि के लिये स्वीकार नहीं किया जाता था (22:21-23)।

दूसरा, बलिदान चढ़ाने वाले को पशु को मारने से पहले, उसे **अपना हाथ** उसके **सिर पर** रखना होता था (3:2)।

तीसरा, बलिदान चढ़ाने वाले को पशु को **बलि करने** के निर्देश दिए जाते थे (3:2)। पशु की खाल खींचने या काटने के बारे में कोई भी उल्लेख नहीं किया गया है। क्योंकि बलिदान अन्य तरीकों से होमबलि के समान ही था, इसलिये यह माना जा सकता है कि जो बलिदान लाता था वह इन कार्यों को भी पूरा करता था।

चौथा, यह याजक का काम था कि पशु के **लहू को** होमबलि की **वेदी के चारों ओर छिड़कें** (3:2)।

पाँचवाँ, बलिदान चढ़ाने वाले को स्वयं उस पशु का वध करना पड़ता था। उसे वेदी पर जलाए गए पशु के कुछ हिस्सों को अलग करना पड़ता था: **अर्थात् जिस चरबी से अंतड़ियाँ ढपी रहती** थीं, **और जो चरबी उनमें लिपटी रहती** थी **वह भी, और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चरबी जो कमर के पास रहती** थी, **और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली** (3:3, 4)। "गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली" का शाब्दिक अर्थ "कलेजे के ऊपर का मांस" है। आर. के. हैरिसन ने इंगित किया कि इसका अर्थ है "पशु के अगले हिस्से की चरबी वाले ऊतकों की चादर।"[7]

छठा, तब याजक, वेदी पर पशु के उन हिस्सों को चढ़ाएगा, **वेदी पर उस होमबलि के ऊपर जलाएँ, जो उन लकड़ियों पर होगी जो आग के ऊपर है** (3:5)।

जिसका परिणाम होगा कि **यह यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे** (3:5)। यहोवा इस बलिदान से प्रसन्न होगा।

"होमबलि के ऊपर" "मेलबलि" कैसे बलिदान किया जाता था? एक सम्भावना यह है कि संदर्भ बलिदानों की एक श्रृंखला के लिये है। ऐसी श्रृंखला में, मेलबलि हमेशा अन्त में आती थी और इसी तरह यह चलता रहता था और उस आग पर चढ़ाया जाता था जिस पर होमबलि का उपयोग किया जाता था। इसके अलावा, सी. ए. केइल और एफ. डेलित्ज्च के अनुसार, "हमेशा प्रतिदिन के होमबलि, जो पहले चढ़ाए जाते थे, मेलबलि यदि पूरे दिन नहीं, तो पूरी घटनाओं में पूरे पूर्वाह्न तक जब तक वह पूरी तरह से जल नहीं जाता था, उसे जलाया जाता था; इसलिये मेलबलि के चर्बी वाले हिस्से को होमबलि के ऊपर रखा जाता था जो पहले से ही जल रहा होता था।"[8]

इन आयतों पर विचार करने से दो तरह के प्रश्न उत्पन्न हो सकते हैं। सबसे पहले, जानवरों के बाकी हिस्सों का क्या होता था? इस सन्दर्भ में जानवरों का हिस्सा याजकों के खाने के लिये दिए जाने के बारे में या बलिदान चढ़ाने वाले से बचे हुए हिस्से को खाने की अनुमति देने के बारे कुछ नहीं कहा गया है। यदि कोई इन नियमों को पहली बार पढ़ रहा होता था, तो वह निश्चित रूप से ध्यान दे सकता था कि ये निर्देश पूरे जानवर को वेदी पर जलाने के बारे नहीं कहते थे। वह सोचता होगा, "बलि किए गए बाकी जानवरों के साथ क्या होता होगा?" उसे उस प्रश्न का उत्तर जानने के लिये अध्याय 7 को अच्छी तरह से पढ़ना होगा।

दूसरा, इन आयतों में विशेष रूप से बताए गए जानवरों के अंगों (गुर्दे और चरबी की विभिन्न परतें) को वेदी पर आग पर बलि करने के लिये परमेश्वर ने इस्राएलियों से क्यों कहा? स्पष्ट है, कि लेख स्वयं ही प्रश्न का कोई स्पष्ट उत्तर नहीं देता है। कई सम्भावनाएँ मन में आती हैं। हो सकता है कि परमेश्वर चरबीयुक्त आहार के हानिकारक प्रभाव से अपने लोगों की रक्षा कर रहा था। बीमारियों के सम्बन्ध में परमेश्वर की सुरक्षा अन्य लेखों में देखी जा सकती है। तो यहाँ क्यों नहीं? हो सकता है कि एक जानवर की चरबी को उसके मांस का सबसे स्वादिष्ट हिस्सा माना जाता है और परमेश्वर बलिदान का सबसे अच्छा हिस्सा उसे देने के लिये कह रहा था (देखें 3:16, 17)। निःसंदेह, ये विचार केवल अनुमानित हैं।

भेड़-बकरियों में से मेलबलि (3:6-17)

एक अन्य प्रकार का पशु जिसे मेलबलि के रूप में चढ़ाया जा सकता था वह "भेड़-बकरियों में से" एक था।

भेड़ के बच्चों में से मेलबलि (3:6-11)

[6]"यदि यहोवा के मेलबलि के लिये उसका चढ़ावा भेड़-बकरियों में से हो, तो चाहे वह नर हो या मादा, पर जो निर्दोष हो उसी को वह चढ़ाए। [7]यदि वह भेड़

का बच्चा चढ़ाता हो, तो उसको यहोवा के सामने चढ़ाए, 8और वह अपने चढ़ावे के पशु के सिर पर हाथ रखे और उसको मिलापवाले तम्बू के आगे बलि करे; और हारून के पुत्र उसके लहू को वेदी के चारों ओर छिड़कें। 9तब मेलबलि में से चरबी को यहोवा के लिये हवन करे, अर्थात् उसकी चरबी भरी मोटी पूंछ को वह रीढ़ के पास से अलग करे, और जिस चरबी से अंतड़ियाँ ढपी रहती हैं, और जो चरबी उन में लिपटी रहती है, 10और दोनों गुर्दे, और जो चरबी उनके ऊपर कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभों को वह अलग करे। 11और याजक इन्हें वेदी पर जलाए; यह यहोवा के लिये हवन रुपी भोजन ठहरे।"

आयत 6. भेड़-बकरियों में से मेलबलि के बलिदान के बारे में निर्देशों की शुरुवात यह विशेषता बताते हुए की गई थी कि जिस पशु का बलिदान चढ़ाया जाए वह **नर या मादा** हो सकता था, परन्तु उसका **निर्दोष** होना अवश्य था। प्रस्तुत लेख "भेड़-बकरियों में से" दो प्रकार के चढ़ावे का वर्णन करता है: एक "भेड़ का बच्चा" (3:7-11) और दूसरा "बकरी/बकरा" (3:12-17)।

आयतें 7-11. भेड़ के बच्चे के चढ़ावे के लिये यहाँ दिए गए निर्देश 3:2-5 में दिए गए गाय-बैलों के चढ़ावे के समान ही हैं: इस्राएली भेड़ के बच्चे का नर या मादा कुछ भी चढ़ा सकता था, जब तक वह "निर्दोष" (3:6; KJV) होता था। **एक भेड़ के बच्चे ... यहोवा के सामने चढ़ाए** (3:7), तो उसे उसके सिर पर हाथ रखे **सिर पर अपने हाथ रखना** और फिर उसे **बलि करना था**। याजकों को **उसके लहू को वेदी के चारों ओर छिड़कना** होता था (3:8)। भेड़ के बच्चे के कुछ हिस्से (3:10) को जलाया जाना था कि वह **यहोवा के लिये हवन रूप भोजन ठहरे** (3:11)। सामान्य रूप से, पशुओं के कुछ हिस्सों को वेदी पर जला दिया जाता था, जो पहले आवश्यक थे जब कोई "गाय-बैलों" में से मेलबलि (3:1-5) चढ़ाता था। अन्तर यह है कि भेड़ के बच्चे की **चरबी भरी मोटी पूंछ** को **रीढ़ के पास** से अलग किया जाता (3:9) और भेड़ के बच्चे के अन्य चरबी वाले भागों के साथ वेदी पर जला दिया जाता था। मवेशियों में "चरबी भरी मोटी पूंछ" गाय-बैलों में नहीं पाई जाती थी।

बड़ी पूंछ वाली भेड़ यहाँ देखने को मिलता है। हैरिसन ने लिखा है कि भेड़ की यह पलिश्ती नस्ल अतिरिक्त कशेरुक होते थे, जो उनकी पूंछ को अतिरिक्त चरबी को जमा करने के लिये सम्भव बनाती थी। उन्होंने यह भी कहा कि जानवर का यह हिस्सा प्राचीन समय से "विनम्रता के रूप में सम्मानित" था।[9] केवल पूंछ ही वजन में तीस पौंड तक हो सकती थी।[10]

बकरा या बकरियों में से मेलबलि (3:12-17)

12"यदि वह बकरा या बकरी चढ़ाए, तो उसे यहोवा के सामने चढ़ाए। 13और वह अपना हाथ उसके सिर पर रखे, और उसको मिलापवाले तम्बू के आगे बलि करे; और हारून के पुत्र उसके लहू को वेदी के चारों ओर छिड़कें। 14तब वह उसमें से अपना चढ़ावा यहोवा के लिये हवन करके चढ़ाए, अर्थात् जिस चरबी से

अंतड़ियाँ ढपी रहती हैं, और जो चरबी उनमें लिपटी रहती है वह भी, 15और दोनों गुर्दे और जो चरबी उनके ऊपर कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभों को वह अलग करे। 16और याजक इन्हें वेदी पर जलाए; यह हवन रूप भोजन है जो सुखदायक सुगन्ध के लिये होता है; क्योंकि सारी चरबी यहोवा की है। 17यह तुम्हारे निवासों में तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी के लिये सदा की विधि ठहरेगी कि तुम चरबी और लहू कभी न खाओ।"

आयतें 12-17. सामान्य नियम है जो झुंड में से बलि के लिये लागू किया जाता था - कि पशु या तो नर या मादा हो सकता था, परन्तु निर्दोष होना चाहिए था (3:6) - जो एक **बकरी या बकरे** के लिये (3:12) भी लागू होता था। फिर एक बकरी या बकरे की मेलबलि के लिये दिए गए निर्देश लगभग "गाय-बैलों" (3:1) की बलि करने के समान हैं। आयत 13 से 16 लगभग 2 से 5 आयतों की हू-ब-हू नकल करता है। एक अन्तर यह है कि एक बकरी या बकरे की बलि के लिये निर्देश कहते हैं कि जानवर को **वेदी पर हवन रुपी भोजन** के रूप में चढ़ाया जाता था (3:16; 3:11 देखें)। भोजन का उल्लेख रूपक के रूप में लिया जाना चाहिए। क्योंकि परमेश्वर इस प्रकार के बलिदान से आनन्दित होता था, उसके लिये यह "भोजन" के समान था; यह उसकी "भूख" को तृप्त करता था, वह चाहता था कि उसके लोग आशीषित हो। तथ्य यह है कि बलिदान को "भोजन" के रूप में कहा जाता है, इसका अर्थ यह नहीं लिया जाना चाहिए कि लैवीय नियमों में परमेश्वर की तुलना देवताओं से की जाए, जिसकी उपासना मूर्तिपूजक करते थे। माना जाता है कि पराए देवताओं का वर्चस्व बनाए रखने के लिये उन्हें शारीरिक भोजन की आवश्यकता होती थी। इसके विपरीत, यहोवा परमेश्वर, सृष्टि को जो इसके अस्तित्व के लिये आवश्यक होता है वह सब कुछ प्रदान करते हुए इसे बनाए रखता है (प्रेरितों 17:24-28)। जैसा कि 3:5 में, **सुखदायक सुगन्ध** का संदर्भ इंगित करता है कि बलिदान से परमेश्वर प्रसन्न होगा (3:16)।

अध्याय 16 और 17 में जो जानकारी दी गई है उसे पहले प्रकट नहीं किया गया था। प्रस्तुत लेख पुष्टि करता है कि **सारी चरबी यहोवा की है** (3:16) और यह कि इस्राएलियों को **चरबी और लहू कभी नहीं खाना** (3:17) था। लहू खाने पर रोक नई बात नहीं थी (देखें उत्पत्ति 9:4), परन्तु चरबी खाने से मना किया गया।[11] जबकि एक बकरी/बकरे का मेलबलि के रूप में बलिदान करने के संदर्भ में पाया जाना, एक सामान्य नियम को प्रकट करता है। आर. लेआर्ड हैरिस ने कहा कि, यद्यपि 7:25 में समानान्तर उस पशु की चरबी के निषेध को सीमित करने के लिये कहता है जो बलिदान किया जाता है, 3:17 में यह वास्तविक में अधिक सामान्य है।[12] जिस प्रकार इस्राएली को लहू खाना निषेध था, उन्हें चरबी खाने पर भी रोक थी। इस सिद्धान्त पर यह कहते हुए बल दिया गया है कि इसे **सदा की विधि** ठहराई गई थी, **तुम्हारे निवासों में तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में** (3:17) निरन्तर चलती रहेगी। दूसरे शब्दों में, "जब तक इस्राएल के साथ वाचा बंधी हुई है, तब तक उन लोगों को लहू और चरबी से दूर रहना था।"[13]

मेलबलि का महत्व

मेलबलि हर एक इस्राएली के आत्मिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया करता था। अध्याय 7 में तीन प्रकार की मेलबलि को दर्शाया गया है: "धन्यवाद" बलि (7:12), "मन्नत" (7:16), और "स्वेच्छा" का बलिदान (7:16)। इसलिये, एक इस्राएली स्वेच्छा से विभिन्न अवसरों पर मेलबलि चढ़ा सकता था: तब जब वह विशेष रूप से आभारी होता था, जब वह प्रभु से किए अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करना चाहता था, या तब जब वह परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहता था और प्रभु में दूसरों के साथ संगति का आनन्द मनाता था। अलग-अलग परिवारों के लिये मेलबलि "पवित्र स्थान में या के निकट पर्व का भोज खाए जाने की" तैयारी होती थी।[14]

इस्राएली राष्ट्र के सार्वजनिक जीवन में मेलबलियाँ भी महत्वपूर्ण होती थीं। मंदिर के समर्पण पर, "और जो पशु सुलैमान ने मेलबलि में यहोवा को चढ़ाए वे बाईस हज़ार बैल और एक लाख बीस हज़ार भेड़ें थीं" (1 राजा 8:63)। उस खुशी के अवसर पर बलि चढ़ाए गए जानवरों पर एक बड़ा जन समूह भोज में शामिल हुआ!

मेलबलि का मूल अर्थ क्या था? वॉरेन डब्ल्यू. वाइर्सबे ने कहा कि इससे "इस तथ्य पर ज़ोर दिया गया कि पापों की क्षमा के कारण परमेश्वर के साथ और परमेश्वर के लोगों के साथ मेल किया जाना था।"[15] रिचर्ड ई. ऑवेरबेक ने इसे "भक्तों का साम्प्रदायिक उत्सव" के रूप में संदर्भित किया जिसने "परमेश्वर और उसके लोगों के बीच 'शान्ति' और 'भलाई' की स्थिति" को प्रकट किया।[16]

इस बलिदान के अभ्यासों के पीछे पाए जाने वाले सिद्धान्तों का सुझाव है कि मेलबलि का नाम बहुत अच्छी रीति से रखा गया था। यह दोनों परमेश्वर और मनुष्य के बीच मेल - मनुष्य और मनुष्य के बीच मेल और मनुष्य के भीतर शान्ति बनाए रखने के लिये प्रयोग किया जाता था। बलिदान का चढ़ाने वाला परमेश्वर की दया चाहते हुए और पूर्ण क्षमा की याचना करते हुए बलिदान चढ़ाया करता था, परन्तु इस प्रकार का बलिदान चढ़ाने के कार्य से संकेत मिलता था कि वह पहले से ही परमेश्वर के साथ एका महसूस करता था। जब वह अपने परिवार और मित्रों के साथ एक संगति भोज में अपना हिस्सा खाता था, तो वह दूसरों के साथ अपनी एका को मनाता था - एकजुटता वे सभी जिसे परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते के कारण साझा करते थे। इस तरह के भोज ने इस एकता को आगे बढ़ाने में योगदान दिया। "शान्ति" या "भलाई" मेलबलि का कारण और परिणाम दोनों था।

अनुप्रयोग

शान्ति का होना (अध्याय 3)

पुराने नियम का मेलबलि मसीहियों को शान्ति की आज की आवश्यकता का स्मरण कराता है। हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जहाँ लगातार युद्ध होते रहते हैं।

हम शान्ति कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

हम परमेश्वर के साथ मेल चाहते हैं। जब हम पाप करते हैं, तो हम परमेश्वर से अपने आपको अलग कर लेते हैं और उसके शत्रु बन जाते हैं (यशा. 59:1, 2; रोमियों 5:10); फिर भी परमेश्वर हमारे साथ मेल-मिलाप करना चाहता है। नई वाचा का संदेश है "परमेश्वर के साथ मेलमिलाप कर लो" (2 कुरि. 5:18-21)। परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा मेलमिलाप को सम्भव किया गया है, जिसने अपने पुत्र यीशु मसीह को हमारे पापों को दूर करने के लिये क्रूस पर मरने - या हमारे पापों का प्रायश्चित करने को दे दिया (रोमियों 3:23-25; 1 यूहन्ना 2:2)। उसकी मृत्यु के कारण, हम, जो एक बार परमेश्वर के शत्रु थे, उसके मित्र बन सकते हैं (इफि. 2:12-14)। हम उसके साथ शान्ति में रह सकते हैं (रोमियों 5:1)।

हम अपने भीतर मेल चाहते हैं. संसार की चिन्ताएँ हमें नीचे खींचती हैं। तनाव और निराशा हमारी आत्माओं पर भारी हो जाती हैं। परन्तु, क्योंकि हम परमेश्वर के साथ मेल रखते हैं, इसलिये हमारे भीतर मेल हो सकता है। यह जानना कि हमारे पापों से हमें क्षमा किया गया है और हम स्वर्ग के मार्ग पर हैं, हमें शान्ति देता है। "... शान्ति, जो सारी समझ से परे है" (फिलि. 4:7)। हम विश्वास करते हैं कि जब यीशु ने कहा, "मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ" (यूहन्ना 14:27), वह अपने प्रेरितों के साथ-साथ हमसे भी कह रहा था। शान्ति जो हमें यीशु से मिलती है, वह नहीं है जिसमें जीवन बिना किसी समस्या के रहा हो; बल्कि, यह एक ऐसा जीवन है जो हमारी समस्याओं पर जय पाने के लिये सहायता से जिया जाता है। यह उस प्रकार की शान्ति नहीं है जिसका आनन्द सांसारिक लोग लेते हैं; क्योंकि हमारे प्रभु ने कहा, "अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता" (यूहन्ना 14:27)। यद्यपि हमें क्लेश तो हो सकता है, पर मसीह में हम शान्ति पा सकते हैं (यूहन्ना 16:33)। शान्ति जो मसीह देता है वह सबसे बड़ी शान्ति है, सबसे अद्‌भुत शान्ति, इस संसार का कोई भी आनन्द कर सकता है।

हम दूसरों के साथ मेल चाहते हैं। हम में से बहुत से लोगों को दूसरे लोगों के साथ समस्याएँ हैं। जबकि हम परमेश्वर के साथ शान्ति में हैं, तो हम दूसरों के साथ भी शान्ति से रह सकते हैं। समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं क्योंकि हम सांसारिक लोगों के बीच रहते हैं, परन्तु हम अपने पड़ोसियों के साथ शान्ति से जीने के लिये अपना पूरा प्रयास करते हैं (रोमियों 12:18)। इसके अलावा, यदि हम वैसा जीएँ जैसा कि हम चाहते हैं - हम उनके साथ वैसा करें जैसा हम दूसरों से चाहते हैं कि वे हमसे करें, तो हमारे पड़ोसी के साथ हमारा कम संघर्ष होगा। यह कलीसिया में होता है कि हम दूसरों के साथ वास्तविक शान्ति का आनन्द उठाते हैं। परमेश्वर के लिये हमारा सर्व सामान्य प्रेम और मसीह में हमारा सामान्य उद्धार दूसरों से हमें बाँधता है, हम प्रेम कर सकते हैं और प्रेम किए जा सकते हैं; हम दूसरों को शान्ति दे सकते हैं और उनसे शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। भाई-चारे का प्रेम दूसरे मनुष्यों के साथ हमारे सम्बन्धों में शान्ति उत्पन्न करता है।

मसीही के लिये, शान्ति की सम्भावनाएं अच्छी होती हैं! हम परमेश्वर के साथ शान्ति में हैं; हम अपने भीतर शान्ति का अनुभव कर सकते हैं; और हम दूसरों के

साथ शान्ति से रह सकते हैं। शान्ति के महान आशीष के प्रत्युत्तर में हमें क्या करना चाहिए? (1) हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम स्वयं उस शान्ति का आनन्द ले रहे हैं जो हमारे पास है। (2) हमें परमेश्वर के साथ मेल - मिलाप की शान्ति का संदेश - दूसरे को देना चाहिए।

मेलबलि: परमेश्वर के साथ एक संगति भोज (अध्याय 3)

होमबलि और अन्नबलि का अध्ययन करने के बाद, हमें पता चल जाएगा कि मेलबलि का अध्ययन करने पर विवरण और समानताएँ धुँधली पड़ जाती हैं। ये सभी तीनों एक समान हैं कि वे परमेश्वर को "सुखदायक सुगंध" के बलिदान की विधि के तहत आते हैं। सभी तीनों बलिदान चढ़ानेवाले के जीविकोपर्जन में से समर्पित किए जाते थे। सबसे उत्तम को परमेश्वर के लिये बलिदान करने के लिये चुना गया था। इस तरह के बलिदान को "परमेश्वर ... के भोजन के" रूप में संदर्भित किया जाता है (21:8, 17, 21, 22; 22:25)।

एक अन्तर यह है कि मेलबलि में सबसे अच्छे, चरबी वाले हिस्से बलिदान के लिये चुने जाते थे। हम स्मरण करते हैं कि शास्त्रों में "चरबी" और "मोटापा" को कितनी बार समृद्ध और उत्तम भागों के प्रतीक के रूप में बताया गया है। जब परमेश्वर ने आदेश दिया कि इस चढ़ावे में सभी चरबी वाले हिस्से उसे दिए जाएँ, तो यह इस बात का प्रतीक था कि सबसे उत्तम भाग उसे दिया जाना है। परमेश्वर का इस सिद्धान्त की पुनरावृत्ति इस्राएल से उसकी अपेक्षाओं को प्रकट करता है कि वह उसे सृष्टि के परमेश्वर होने और सबसे उत्तम भाग का अधिकारी होने का श्रेय और सम्मान दे। उसके अनुग्रह द्वारा अनुमोदित एकमात्र अन्तर आर्थिक स्थिति पर आधारित मतभेद थे, जैसा कि विभिन्न प्रकार के बलिदानों में देखा गया है।

मेलबलि का एक और अनूठा पहलू यह है कि परमेश्वर की माँगें पहले पूरी की जानी थी। उसके आराधकों के लिये प्रावधान किसी भी उद्देश्य में दूसरे स्थान पर होती थी। इस सिद्धान्त का हमारे स्वार्थ भरे जीवन में ज़ोर दिया जाना चाहिए। आज के लोगों के सामान्य रवैये "में मेरे लिये क्या है?" यीशु ने परमेश्वर और अन्य लोगों को अपने समक्ष रखने के महत्व पर ज़ोर दिया: "लेने से देना धन्य है" (प्रेरितों 20:35)।

मेलबलि और अन्य दो बलियों के बीच अभी भी एक और अन्तर पाया जाता है। जब होमबलि या अन्नबलि दी जाती थी, तो चढ़ाने वाले का भाग मूल रूप से अधिक होता था। होमबलि पूरी रीति से परमेश्वर के पास चला जाता था। अन्नबलि में, एक भाग के बलिदान के बाद, शेष याजकों के पास चला जाता था। यह हिस्सा उनके लिये नियुक्त किया गया था क्योंकि वे परमेश्वर की मेज़ पर सेवा टहल करते थे। मेलबलि के बारे में यह था कि, बलिदान का चढ़ानेवाला भी बलिदान के एक हिस्से को खाता था। यहाँ शायद हम हृदय से काम लेते हैं और मेलबलि की इच्छा करते हैं: जिसमें परमेश्वर की मेज़ पर चढ़ानेवाला और याजक दोनों की सहभागिता होती है।

मेलबलि चढ़ाना। बाइबल में, एक सिद्धान्त या आज्ञा एक ही स्थान पर दिया

जा सकता है और उसके बाद उसके उदाहरण, कि कैसे इस सिद्धान्त या आज्ञा को अन्य स्थानों पर प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ परमेश्वर द्वारा मूसा के माध्यम से दिया गया निर्देश है। बलिदान और उनकी विधियों के बारे में उसकी आज्ञा और निर्देश लैव्यव्यवस्था में पाई जाती हैं। परन्तु, कुछ उदाहरणों को कि उन्हें किस तरह से किया जाना था, इस मामले में व्यवस्थाविवरण में कहीं और लिखा गया है। व्यवस्थाविवरण 12 का संदर्भ निवास स्थान के नियमों और परमेश्वर के निर्देशों से सम्बन्धित है, विशेषकर उनके बलि के भोजन के बारे में। व्यवस्थाविवरण 12:6, 7, 17, 18 में, मूसा ने कहा था कि जब वे पवित्र वस्तुओं को खाते थे, जैसे कि मेलबलि के भोज में, तो उन्हें जगह का चयन नहीं करना था; परमेश्वर उसका चयन कर चुका था कि वे उसे उसके सामने ही खाएँ। ऐसा लगता है कि परमेश्वर चाहता था कि मेलबलि के भोजन को उसी समय निवास स्थान के आंगन की दीवारों के भीतर याजकों के साथ खाया जाना चाहिए।

मेलबलि के बारे में एक पेचीदा प्रश्न यह है कि: क्या यह एक ऐसा भोज था जो इस्राएली द्वारा परमेश्वर को चढ़ाया गया और प्रस्तुत किया गया था या फिर क्या यह परमेश्वर द्वारा इस्राएली लोगों को दिया गया भोज था? इसलिये, मेज़बानी करने वाला कौन था, और अतिथि के रूप में कौन था? इस्राएल के आस-पास के अन्य राष्ट्रों में, यह प्रथा थी कि भोज हमेशा बलि चढ़ाने वाले के द्वारा उसके देवताओं के लिये दिया जाता था। अश्शूर में पाए गए नीनवे के एसारहद्दोन के बारे में एक शिलालेख में यह विचार लिखा गया है:

> "मैं अपने साम्राज्य के भव्य महल की सुन्दरता से फूला नहीं समाता, और मैंने इसे 'विश्व का प्रतिद्वंद्व करनेवाला महल' कहा है। अश्शूर, नीनवे का ईश्तार और अश्शूर के देवता, उन सभी को मैंने इसके भीतर भोज करवाया। बलि किए जाने वाला पशु, कीमती और सुन्दर वस्तुओं को मैंने उनके आगे बलिदान किया, और अपनी भेंट स्वीकार करने के लिये मैंने उनके मनों को तैयार किया।"[17]

इस अवधारणा से पता चलता है कि मूर्तिपूजक संस्कृतियों में पुरुष को मेज़बान माना जाता था। परन्तु, लगता है कि लैव्यव्यवस्था के निर्देशों में इस अवधारणा को उलट दिया गया। यह शुरू से ही परमेश्वर ही था जिसने बलिदान किए जाने के निर्देश दिए थे कि, क्या बलिदान चढ़ाना था और किस तरीके से उन्हें भेंट किया जाना था। केवल उन निर्देशों के पालन करने के बाद ही परमेश्वर के आगे के दिए निर्देश लागू होते थे। तब बलिदान चढ़ाने वाले के पास स्वयं के लिये और याजकों के लिये बलिदान का एक भाग होता था। इस रीति से, परमेश्वर अपनी मेज़ पर स्वयं मेज़बान, और बलिदान चढ़ाने वाला अतिथि होता था। इस्राएली को आमन्त्रित किया जाता था, और वह परमेश्वर का स्वयं का मेज़ था जिस पर वह भोज करता था। शान्ति और संगति का निमन्त्रण एक मित्र के रूप में परमेश्वर द्वारा मित्र को दिया जाता था। कितना सुन्दर प्रतीक है! परमेश्वर इस्राएल को सिखा रहा था कि कैसे सटीक तरीके से उसके साथ भोज और सहभागिता प्राप्त की जा सकती थी। एक साथ संगति भोजन यह एक प्रतीक था जिससे वे सदियों से

परिचित थे। एक चिन्तन को भी उल्लेखित करने की आवश्यकता हो सकती है और बाद में इसे पूरी तरह से माना जाएगा: यह शान्ति का और अलगाव की कमी का विचार है जो पापबलि के द्वारा पूरा किया जाता था। बलिदान चढ़ाने वाला परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में होता था क्योंकि लहू का हस्तक्षेप हो जाता था। हो सकता है कि किसी भी अपमान को पापबलि के द्वारा एक बार फिर सही बनाया जाता हो। इसके पूरा हो जाने पर, मेलबलि का पालन कर सकते हैं।

मसीह, हमारा मेलबलि। हम बाइबल में दिए गए मसीह के विभिन्न प्रकारों और प्रतिरूपों को देखते आ रहे हैं। इसलिये, हमारा मन उन प्रतीकों से भरा हुआ होना चाहिए, जो नए नियम में मसीह के हमारे मेलबलि होने के प्रतीक हैं। इफिसियों के नाम पौलुस की पत्री में एक अनुच्छेद दिखाई देता है:

> पर अब मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो। *क्योंकि वही हमारा मेल है जिसने दोनों को एक कर लिया* और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी ढा दिया, और अपने शरीर में बैर अर्थात् वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएँ विधियों की रीति पर थीं, *मिटा दिया कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न कर के मेल करा दे,* और क्रूस पर बैर को नाश करके इसके द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए। और *उसने आकर तुम्हें जो दूर थे और उन्हें जो निकट थे, दोनों को मेलमिलाप का सुसमाचार सुनाया। क्योंकि उसी के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुँच होती है* (इफि. 2:13-18; बल दिया गया है)।

मेलबलि के बलिदान के मामले में, वेदी पर बलिदान किया हुआ पशु परमेश्वर को चढ़ाया जाता था और बलिदान चढ़ाने वाले के लिये मेज़ पर रखा भोजन वही और एक ही था। फिर भी, यीशु मसीह, परमेश्वर को जिसने स्वयं का बलिदान हमारे लिये कर दिया, मसीही के लिये परमेश्वर की मेज़ पर आवश्यक भोजन भी बन गया। मसीही के लिये, इसे प्रभु भोज के संगति भोज में देखा जा सकता है। यीशु के समय के यहूदी इस आपस के सम्बन्ध को समझ नहीं पा रहे थे। उन्होंने आपस में स्वयं यीशु के कथन पर प्रश्न उठाए: "यह मनुष्य कैसे हमें अपना मांस खाने को दे सकता है?" (यूहन्ना 6:52)। फिर भी, यीशु ने स्पष्ट रूप से कहा था, "जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूँगा, वह मेरा मांस है" (यूहन्ना 6:51)। मेलबलि के नियम का प्रकाश वापस यहूदियों पर चमकना चाहिए क्योंकि मूसा ने कहा था, "और वहीं मेलबलि भी चढ़ाकर भोजन करना, और अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख आनन्द करना" (व्यव. 27:7)। यहाँ मसीह ने यह घोषणा करते हुए कहा था कि वह वही मांस था, जिसे उन्हें अब खाना था, और ऐसा करने के द्वारा वे हमेशा के लिये जीवित रहेंगे (यूहन्ना 6:33, 55 , 57)।

कितनी अच्छी आशीष है यह, जो परमेश्वर ने अपनी कलीसिया में नया नियम के मसीही के रूप में हमें दी है! उसने हमारे लिये उसके साथ एक साप्ताहिक सहभागिता भोजन रख छोड़ा है; हम जब हर रविवार को प्रभु भोज में हिस्सा लेने के लिये इकट्ठा होते हैं। पौलुस ने हमें इस पर्व और कैसे यीशु (परमेश्वर) ने स्वयं

उस भोज की मेज़बानी की के बारे में स्मरण कराया है (1 कुरि. 11:23-26)। यीशु ने कहा था कि रोटी उसका देह और दाखरस उसका लहू था, जिसे वह क्रूस पर बहाने वाला था। उसने भोज का समापन यह कहते हुए किया कि वह परमेश्वर के राज्य, कलीसिया में जैसे हम उसके अपने मेज़ के चारों ओर इकट्ठा होते हैं भोजन की मेज़बानी करेगा (मत्ती 26:29)।

उपसंहार। संगति का कितना अद्‌भुत मार्ग परमेश्वर ने दोनों वाचाओं के अपने लोगों के लिये प्रदान किया है! नए नियम के युग में हमारे लिये यह चुनौती है कि आज जो परमेश्वर के साथ भोज और संगति के महान अवसर हमारे पास हैं उसकी सराहना करें।

मैक्स रबेट

समाप्ति नोट्स

[1]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राईवर, एण्ड चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *अ हिब्रू एण्ड इंग्लिश लेक्सिकॉन ऑफ़ दि ओल्ड टेस्टामेंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लारेन्डॉन प्रेस, 1977), 1116. "शालोम" आज भी यहूदियों द्वारा उपयोग किया जाने वाला अभिवादन है। [2]जॉर्ज ए. एफ. नाइट, *लैव्यव्यवस्था*, द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिन्स्टर प्रेस, 1981), 22. [3]गोर्डन जे. वेनहम, *द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था*, दि ओल्ड टैस्टमैंट न्यू इंटरनेशनल कॉमेंटरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979), 77. [4]अन्य विवरण लैव्यव्यवस्था 7 में दिए गए हैं। [5]रिचर्ड ई. आवेररबेक, "सेक्रीफाईसेस एण्ड ओफरिंग्स," इन *डिक्शनरी ऑफ़ दि ओल्ड टेस्टामेंट: पेन्टाट्युक*, एड. टी. डेसमंड अलेक्जेंडर एण्ड डेविड डब्ल्यू. बेकर (डाउनर्स ग्रोव, इल.: इंटरवर्सीटी प्रेस, 2003), 715. [6]पूर्वोक्त। [7]आर. के. हैरिसन, *लैव्यव्यवस्था*, द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेंटरीस (डाउनर्स ग्रोव, बीएल: इंटर-वर्सीटी प्रेस, 1980), 58. [8]सी. एफ. केइल एण्ड एफ. डेलित्ज्च, *द पेन्टाट्युक*, वॉल्यूम 2, ट्रांस. जेम्स मार्टिन, बिब्लिकल कॉमेंटरी एण्ड ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1959), 300. [9]हैरिसन, 59. [10]पॉल लेस्ली गारबर, "शीप; शेफ़र्ड," इन *दि इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल एनसाइक्लोपीडिया*, रेव्ह. एड., एड. जॉफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1988), 4:463.

[11]लैव्यव्यवस्था 7:23-27 में भी चरबी और लहू खाने पर रोक लगाता है और कहता है कि जो ऐसा करता था वह अपने लोगों से "अलग कर" दिया जाता था। [12]आर. लायरड हैरिस, "लेवीटिकस," इन *दि एक्सपोजिटर्स बाइबल कॉमेंटरी*, वॉल्यूम 2, *उत्पत्ति - गिनती*, एड. फ्रैंक ई. गेबेलेन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जॉन्डर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1990), 544. [13]क्लाइड एम. वुड्स, *लैव्यव्यवस्था - गिनती - व्यवस्थाविवरण*, द लिविंग वे कॉमेंटरी ऑन दि ओल्ड टेस्टामेंट, वॉल्यूम 2 (श्रेवेपोर्ट, ला.: लैम्बर्ट बुक हाउस, 1974), 9. [14]वेन्हम, 75. [15]वॉरेन डब्ल्यू. वाईर्सबे, *बी होली* (व्हीटन, इल.: विक्टर बुक्स, 1994), 25. [16]ऑवेरबेक, 715. [17]एस. एच. केलॉग, *द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था*, 3र्ड एड. (एन.पी.: ए. सी. आर्मस्ट्रांग एण्ड सन, 1899; रीप्रिंट, मिनियापोलिस: क्लॉक एण्ड क्लॉक क्रिश्चियन पब्लिशर्स, 1978), 91.